ISSN - 2249-555X
IMPACT FACTOR:3.919

A Peer Reviewed, Referred, Refereed
& Indexed International Journal

Journal DOI : 10.15373/2249555X
INDEX COPERNICUS IC VALUE : 74.50

INDIAN JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

Journal for All Subjects

www.ijar.in

VOLUME : 6 | ISSUE : 3 | March 2016

₹ 350

RESEARCH PAPER | Commerce | Volume : 6 | Issue : 3 | March 2016 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 74.50

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में लघु उद्योगों की स्थिति

KEYWORDS

डॉ.एच.एस.भाटिया
सहायक प्राध्यापक(वाणिज्य)
शास.नेहरू,स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोंगरगढ़,जिला –राजनांदगांव(छ.ग.)

सत्यदेव त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक(वाणिज्य) शास.रानी अवंती बाई लोधी महाविद्यालय घुमका, जिला–राजनांदगांव (छ.ग.)

ABSTRACT छत्तीसगढ का प्रवेश द्वार कहा जाने वाला राजनांदगांव जिला औद्योगिक दृष्टि से 'B' (Backword) श्रेणी का जिला है । यह मुख्यतःग्रामीण जनसंख्या और आदिवासी बाहुल्य वाला जिला है । वर्तमान मे जिले में सूक्ष्म लघु मध्यम,वृहद एवं मेगा पांचो श्रेणियो की औद्योगिक इकाइयों का परिचालन हो रहा है । मेरे अध्ययन का मुख्य केन्द्र जिले मे लघु उद्योगों की स्थापना की प्रवृत्ति,इनमें वर्षवार पूंजी विनियोजन एवं रोजगार उपलब्धता की स्थिति का आकलन कर लघु उद्योगों की स्थिति ज्ञात करनी है ताकि भविष्य में जिले के आर्थिक विकास में इन उद्योगों के योगदान को चिन्हांकित किया जा सके ।

प्रस्तावना :–

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये अत्यन्त उपयोगी लघु उद्योगों नें देश मे बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न बेरोजगारी और आर्थिक विषमता, गांवो में शहरों की ओर पलायन रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । भारतीय लघु उद्योग का अतीत बड़ा स्वर्णिम रहा है । प्राचीन भारतीय लघु एवं कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित सूतीवस्त्र,बहुमूल्य धातुकर्म, जवाहरात के काम,काष्ठ नक्काशी आदि विश्वविख्यात थे । प्राचीन भारतीय लघु एवं कुटीर उद्योगों को उस समय उत्पादित सभी वस्तुओं में निपुणता प्राप्त थी । अतीत मे भारत को विश्वव्यापार का सिरमौर बनाने वाली लघु उद्योग इकाइया अपनी उत्कृष्ठ उत्पादन कौशल कला की पुनरावृत्ति आज भी कर सकते है । साथ ही निर्यात संवर्धन, विश्वव्यापार में प्रभुत्व,रोजगार उत्पादन आदि जैसे चुनौतियों का सामना लघुउद्योगों के माध्यम से सहजता के साथ किया जा सकता है । अध्ययन का उददश्य :– मेरे द्वारा छत्तीसगढ़ के राजनांदगाव जिले में लघुउद्योगों की स्थिति विषय को शोध के लिये चयन करने के प्रमुख उदेश्य निम्न है :–

1) राजनांदगांव जिले के औद्योगिक परिदृश्य में लघु उद्योगों की स्थिति का पता लगाना ।
2) लघु उद्योगों द्वारा दिये जाने वाले रोजगार उत्पादन की वर्तमान स्थिति एवं भावी संभावनाओं का पता लगाना ।
3) लघुउद्योगों के स्थापना एवं संचालन मे आने वाली समस्याओ का पता लगाना एवं उसके निराकरण हेतु उपाय प्रस्तुत करना ।

अध्ययन की सीमायें :–

1) मेरा अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक समको पर आधारित है और उपलब्ध समको की विश्वसनीयता,प्रमाणिकता,सत्यता और सार्थकता की पूर्णरूपेण जांच करने के उपरान्त ही इसका उपयोग किया गया है ।
2) अध्ययन में प्राथमिक समंको का संकलन औद्योगिक सूत्री में से प्रत्येक औद्योगिक क्षेत्र से 05–05 लघु उद्योगों का दैव–निदर्शन पद्धति द्वारा चयन कर किया गया है ।
3) प्राथमिक समंक केवल राजनांदगांव जिले के लघु उद्योगो से संबंधित है एवं ये समंक केवल वर्ष 2000–01 से 2012–13 के है ।

हमारे देश मे करोड़ो ऐसे लोग है जिनके जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकतायें–रोटी,कपडा और मकान की भी पूर्ति नही हो पाती । अमीर और अमीर होता जा रहा है और गरीब और गरीब । इस आर्थिक विषमता की गहरी खाई को पाटना तभी समव है जब गरीब भी अपनी शारीरिक ,मानसिक और आर्थिक क्षमतानुसार उद्यमिता को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति मे सुधार करे । ऐसा केवल लघुउद्योगो पर आधारित आर्थिक संरचना से ही समव है ।

मेरा अध्ययन 1 नवंबर , 2000 से पृथक छत्तीसगढ राज्य निर्माण के उपरान्त राजनादगांव जिले में लघुउद्योगो के विकास,इनमें पूंजी विनियोजन एवं रोजगार उपलब्धता पर आधारित है, जो कि निम्नतालिका से स्पष्ट हो रहा है :–

तालिका कमांक 1
जिले मे लघुउद्योगो की स्थापना की वर्षवार प्रवृत्ति

वर्ष	स्थापित इकाइयां	पूंजी विनियोजन (लाख रू में)	रोजगार उपलब्धता
2000–01	301	380.07	743
2001–02	52	31.34	259
2002–03	168	172.90	517
2003–04	31	157.13	361
2004–05	42	297.67	362
2005–06	47	497.45	396
2006–07	32	889.49	407
2007–08	42	133.92	466
2008–09	54	218.14	527
2009–10	45	1251.99	963
2010–2011	60	1470.47	677
2011–2012	158	246.24	606
2012–2013	64	1281.38	471
	1096	7028.19	6755

स्रोत: जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, राजनांदगांव (छ.ग.)

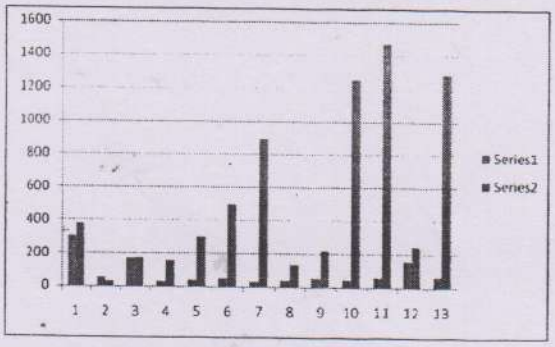

चित्र कमांक – 01 स्थापित इकाई और पूंजी विनियोजन

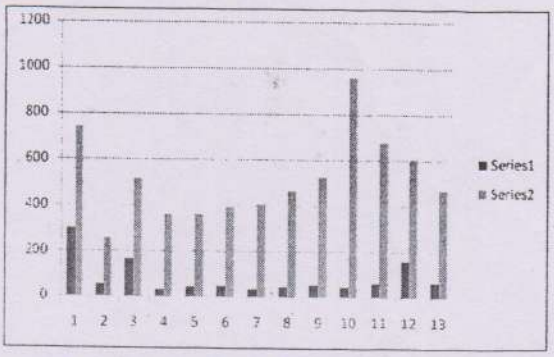

चित्र कमांक – 02 स्थापित इकाई और रोजगार उपलब्धता

उपरोक्त तालिका कमांक 1 के विश्लेषण से यह ज्ञात हो रहा है कि राज्य निर्माण

Volume : 6 | Issue : 3 | March 2016 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 74.50

के पश्चात वर्ष 2000–01 में सर्वाधिक लघु उद्योग इकाइयां स्थापित हुई जिनकी संख्या 301 है और इनमें पूंजी विनियोजन 380.07 लाख रूपये थी । बाद के वर्षो में स्थापित इकाइयों की संख्या तो कम हुई लेकिन आनुपातिक रूप से विनियोजित पूंजी बढ़ती ही गई । वर्ष 2006–07 में स्थापित लघु इकाइयां 32 और विनियोजित पूंजी 889.49 लाख रूपये , 2009–10 में स्थापित इकाइयां 45 और विनियोजित राशि 1251.99 लाख रूपये वर्ष 2010–11 में स्थापित इकाइयां 60 और विनियोजित राशि 1470.47 लाख रूपये और वर्ष 2012–13 में पंजीकृत इकाइयां 64 और इनमें विनियोजित राशि 1281.38 लाख रूपये रही । इस प्रकार प्रति इकाई विनियोजित राशि में वृद्धि की प्रवृत्ति दिख रही है ।

इसी प्रकार राज्य निर्माण के बाद के 13 वर्षो (2000–01 से 2012–13) में जिले मे कुल 1096 लघु उद्योग स्थापित हुये एवं इनमें नियोजित व्यक्तियों की संख्या 6,755 है अर्थात प्रति उद्योग औसत नियोजन 06 है । वर्षवार रोजगार उपलब्धता में वर्ष 2000–01, 2009–10, 2010–11 एवं 2011–12 में कमशः 743, 963, 677 एवं 606 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करने में तुलनात्मक रूप से अन्य वर्षो से बेहतर रहे है । लेकिन उद्योगों की संख्या के आधार पर औसत नियोजन की स्थिति में वर्ष 2009–10, 21.4 के आधार पर श्रेष्ठ वर्ष रहा है । इसके पश्चात वर्ष 2003–04, 2007–08 एवं 2010–11 में औसत नियोजन कमशः 11.65, 11.09 एवं 11.28 रही है जबकि सबसे कम औसत नियोजन वर्ष 2000–01 में 2.47 रही है ।

निष्कर्ष :–

(1) राजनांदगांव जिले में प्रतिवर्ष औसत 84 लघु उद्योग स्थापित हुये है और इनमें औसत पूंजी विनियोजन (वार्षिक) 540.63 लाख रूपये हुई है जो कि संतोषजनक स्थिति नही है ।

(2) इसी प्रकार जिले के लघुउद्योगों में प्रति उद्योग औसत 06 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध होने की स्थिति में राजनांदगांव जिले के लघुउद्योग, जिले की बेरोजगारी एवं अर्द्धबेरोजगारी को किस सीमा तक दूर कर पायेंगे,यह विचारणीय तथ्य है ।

(3) इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राजनांदगांव जिले मे लघु उद्योगों की स्थिति एव विकास की निरंतरता संतोषप्रद नहीं है । लघु उद्योगों के विकास के लिये जिले में शासन – प्रशासन को अतिरिक्त रूचि लेने की आवश्यकता है ।

संदर्भ ग्रंथ :–

(1) छत्तीसगढ़ शासन, वाणिज्य एवं उद्योग तथा सार्वजनिक उपकम विभाग, रायपुर का प्रशासकीय प्रतिवेदन, वर्ष 2001–01 से 2012–13 तक
(2) माथुर डॉ0 बी0एल0,लघुउद्योग वित्त, अर्जुन पब्लिसिंग हाऊस नईदिल्ली
(3) माथुर डॉ0 बी0एल, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, अर्जुन पब्लिसिंग हाऊस नईदिल्ली
(4) त्रिपाठी प्रो0 मधुसूदन,लघुउद्योग : महत्व एवं समस्यायें, राधा पब्लिकेशन्स, नईदिल्ली

KEYWORDS

Bala

MBBS,DMRD Research S
Nadu, India (*

ABSTRACT Cardiac ev
diac abnor
ducted studies. Presenc
chromosomal or genetic
abnormality, when a car
congenital heart defect
tract abnormalities. Abou
of Atrioventricular septal
knowledge and as far as

ıtroduction

)ver the years, as the pra
as evolved, a consensus
hers, radiologists, obstetr
ine subspecialists: screeni
erves the dubious distinct
hallenging and least succ
onography.(1-3) Because c
creening the foetus for c
he rate of prenatal detec
HD remains disappointi
nalities are associated with
round 20% in prospective
f combination of cardiac
associated with a risk of
rome. The commonest ext
ted with a congenital hea
f Central Nervous system,
tal and urinary tract abnor

trioventricular septal defe
ocardial cushion defects in
itral and tricuspid valves a
icular septum which is a
atal life.(8)The estimated ir
om 0.33/1000 live births t

omplete AVSD (cAVSD) is
raphic hallmark of a com
he distortion of the norma
eart. Prenatal detection o
ause it is usually associate
es such as Trisomy 21, wh
ases.(10)

rnold – Chiari Type II Ma
mall posterior cranial foss
isplacement of cerebellum
ongata , pons (hindbrain st
men magnum. It is always

ISSN - 0973-1628

An International, Registered and Referred
Monthly Journal - Impact Factor 2.782 (2015)

Contents - 155

■ Research Link - 155 ■ Vol - XV (12) ■ February - 2017

Assam & Andhra Pradesh Exclusive

- Romantic Reflection in the Poems of Lakshminath Bezbaroa and Abd al-Rahman Shukri : A Comparative Study
  Dr. M. Nurul Amin Sheikh (464).....6
- Breaking Down The Barriers of Culture - Chetan Bhagat's 2 States : The Story of My Marriage
  C. Sree Vijaya Durga (480).....9

Punjab Exclusive

- ਉਪਨਿਸ਼ਦ ਅਤੇ ਸੂਤ੍ਰ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਸੰਗੀਤ
  ਡਾ. ਤੇਜਿੰਦਰ ਗੁਲਾਟੀ, ਡਾ. ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (476).....11
- Role of Co-Curricular Activities in Education
  Dr. Ruby Vij (486).....14
- राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में व्यक्त मानवीय मूल्य
  डॉ.हरदीप कौर (466).....17
- राष्ट्र समर्पित गीत - इतिहास और विकास : एक अध्ययन
  शिखा मेहरा एवं डॉ.राजेश शर्मा (437).....19

Science

- Physical Oceanography
  Dr. Neeraj Dubey (488).....22
- An Eco-Friendly Procedure for The Synthesis of Chalcone of 3-Acetyl Pyridine
  Anubhav Pradeep (443).....25
- Enumeration and Documentation of Diversity of Trees of Leading College Campus of Indore City (M.P.)
  Saroj Mahajan & Anita Gangrade (485).....27
- Observation of Physico-Chemical Characteristics of Banihar Dam, Khargone (M.P.)
  Dr. Anita Solanki (451).....29

Library Science

- A Study & Critical Analysis of Content Management System Software
  Pradeep Kumar Gupta & Narendra Kumar Patidar (471)..31
- Lack of Standard in Subject Repository : A Review
  Narendra Kumar Patidar & Pradeep Kumar Gupta (471)..34

English Literature

- Christopher Marlowe and Doctor Faustus
  Anant Gawande (438).....37
- A Transcultural Study of Zadie Smith's White Teeth
  Betsy Mathew (483).....39
- Empowered Women Portrayals in The Short Stories of Rabindranath Tagore : Mashi and Raja Rani
  Dr. Vikas Jaoollkar & Mrs. Pooja Bhatia (469).....42
- Shakespearean Concept of Romantic Love in his Comedies
  Abhay Kumar Singh (475).....44

Sanskrit Literature

- काव्य-सर्जन में मूल कारण (संस्कृत काव्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में)
  डॉ.तरुण कुमार शर्मा (444).....46

Hindi Literature

- हिन्दी के वरिष्ठ कवि एवं कथाकार रामदरश मिश्र का रचना-संसार
  डॉ.प्रतिमा यादव व निशा सिंह रघुवंशी (453).....49
- राष्ट्रीय जनजागरण में भोजपुरी लोकगीतों का ध्वन्यात्मक प्रभाव
  डॉ.शैलेन्द्र कुमार ठाकुर (392).....51
- शिवशंकर पटनायक के उपन्यासों में जीवन मूल्य : एक अध्ययन
  दीप्ति गोस्वामी एवं आभा तिवारी (468).....54
- भक्तिकाल एवं आधुनिक काल की बदलती साहित्यिक चेतना - सूर काव्य के विशेष संदर्भ में : एक तुलनात्मक अध्ययन
  डॉ.वारिश जैन (428).....57

History

- भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीत - लोकमान्य टिळकांचे योगदान
  कोकीळा अ.गावंडे (देवतळे) (439).....59
- Epigraphical Note on Religious Life in The Post Gupta Period (With special reference to Madhya Pradesh)
  Dr. Vishal Soni (442).....61
- गुप्तोत्तर कालीन मध्य भारत के राजवंश, 7वीं सदी से 13वीं सदी के विशेष संदर्भ में : एक अध्ययन
  डॉ.(श्रीमती) पप्पी चौहान (463).....63

Sociology

- उत्तराखण्ड में नारी सशक्तिकरण (टिहरी जनपद के घनसाली क्षेत्र के संदर्भ में)
  डॉ.रेखा बहुगुणा (339).....66
- भुंजिया जनजाति परिवार पर आधुनिकीकरण का प्रभाव (छत्तीसगढ़ राज्य के गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.तुलसिंह सोनवानी (462).....68
- नव-विवाहित दाम्पत्य और द्वितीय नातेदारी सम्बंध : एक अध्ययन
  मनीला चौबे एवं डॉ.निस्तर कुजूर (447).....71
- कमार जनजाति की बालिकाओं पर सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छूरा विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.श्रद्धा गिरोलकर एवं प्रतिमा बेन (450).....74
- राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना एवं श्रम पलायन : एक मूल्यांकन
  भेष कुमार देव्रांगन एवं डॉ.एल.एस.गजपाल (461).....77
- शासकीय प्राथमिक शालाओं की समस्याएँ व शैक्षणिक स्तर
  उत्तम सिंह टण्डन एवं डॉ.(श्रीमती) अश्विनी महाजन (422)..80

Political Science

- Federalism and Nation Building
  Tushma Devi & Dr. Chanchal Kumar Sharma (490)....82
- अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में भारत की भूमिका : एक अध्ययन
  सुरज्ञान सिंह यादव एवं राजेश कुमार शर्मा (424).....85
- छत्तीसगढ़ विधानसभा में स्पीकर का पद : एक अध्ययन
  डॉ.आर.के.पुरोहित एवं श्रीमती रेणुका शर्मा (449).....87
- ई-गवर्नेंस की अवधारणा व विकास के नये क्षितिज
  डॉ.(श्रीमती) नागरत्ना गणवीर, डॉ.डी.एन.सूर्यवंशी व श्रीमती सपना वैष्णव (459).....90

Education

- A Correlational Study of Academic Self-Efficacy and Academic Achievement of Adolescent Students in Relation to Gender and Locale
  Dr. (Smt.) Pushpalata Sharma & Sarbani Mukherjee (478)...92

ISSN -0973-1628 (2)

Impact Factor 2015 2.782

An International, Registered, Recognized and Monthly Refereed Journal

April - 2017

■ Research Link - 157 ■ Vol - XVI (2) ■ April - 2017

Contents - 157

Baisakhi Exclusive : Punjab

- ਭਗਵਦ੍‌ਗੀਤਾ ਅੌਰ ਆਦਿਗ੍ਰੰਥ ਮੇਂ ਸਾਮ੍ਯ ਤਤ੍ਵਜ੍ਞਾਨ
  ਡੌ.ਰਮੇਸ਼ ਸੋਬਤੀ (H) 7
- ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਦਾ ਲੈਜ-ਯੁਕਤ ਰੂਪ : ਛੰਦ ਪ੍ਰਬੰਧ
  ਡਾ. ਤੇਜਿੰਦਰ ਗੁਲਾਟੀ, ਡਾ. ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (571(1)) 11
- ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦਾ ਸਾਹਿਤਕ ਦਰਬਾਰ: ਕਲਮ ਤੇ ਕਿਰਪਾਨ ਦਾ ਸੁਮੇਲ
  ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ (571(3)) 14
- ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੀ ਨਦੌਣ ਦੀ ਜੁੱਧ ਨੀਤੀ : ਇਤਿਹਾਸਕ ਅਧਿਐਨ
  ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ (571(4)) 17
- ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਰਵਾਲਸਰ ਸਾਹਿਬ : ਇਤਿਹਾਸਮਿਕ ਪ੍ਰਸੰਗਕਿਤਾ
  ਸ੍ਰ.ਗੁਰਮੇਲ ਸਿੰਘ (571(2)) 20
- ਹੱਥ-ਲਿਖਤ 'ਬਾਰਾਮਾਹ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ' : ਬਹੁਪੱਖੀ ਅਧਿਐਨ
  ਰਾਜਬੀਰ ਕੌਰ (571(5)) 23
- ਅਕਾਲ ਉਸਤਤਿ : ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਸੁਹਜ ਸਰੂਪ
  ਡਾ. ਰੁਪਿੰਦਰ ਕੌਰ (571(6)) 26
- ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੀ ਪਵਿੱਤਰ ਇਤਿਹਾਸਕ ਨਿਸ਼ਾਨੀ (ਪਿੰਡ ਗੋਲੇਵਾਲਾ ' ਫਰੀਦਕੋਟ)
  ਸਲਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (571(7)) 29
- Creation of Khalsa in the Eyes of Persian Authors
  Samrath Kaur (571(8)) 31
- ਨਾਰੀ ਸੰਤੋਂ ਕੀ ਭਕ੍ਤਿ ਭਾਵਨਾ
  ਪ੍ਰਿਆ ਭਸੀਨ (549) 34
- ਪਦ੍‌ਮਭੂਸ਼ਣ ਪੰਡਿਤ ਰਾਜਨ ਮਿਸ਼੍ਰ ਏਵਂ ਪੰਡਿਤ ਸਾਜਨ ਮਿਸ਼੍ਰ : ਜੀਵਨਵ੍ਰੁਤ੍ਤ, ਵ੍ਯਕ੍ਤਿਤ੍ਵ ਤਥਾ ਕ੍ਰੁਤਿਤ੍ਵ
  ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਕਸ਼੍ਯਪ (555) 37
- ਬੈਸਾਖੀ ਪਰ੍ਵ
  ਪ੍ਰਤਾਪਸਿਂਹ ਸੋਢ਼ੀ ਏਵਂ ਰ੍ਵਨੀਲ ਕੌਰ ਸਿਮ੍ਮੀ (571) 40

Assam & Andhra Pradesh Exclusive

- Rural and Urban Students Participation, Infrastructural Facilities and Their Attitudes at Intercollegiate Level Sports Activities of Non-Professional Colleges of Yogi Vemana University : An Insight
  N. Raghunadha Reddy (566) 41
- The Theme of The Seven Suspended Poems : A Study
  Shahalom Islam (564) 44

Science

- Stellar Population
  Dr. Neeraj Dubey (543) 47

English Literature

- Shashi Deshpande : Feminism in Roots and Shadows
  Dr. Alka Bharatrao Deshmukh (429) 50

Hindi Literature

- हिन्दी गीतिकाव्य में सूर, मीरा और तुलसी
  डॉ.राजेश कुमार सिंह (536) 53
- साहित्यकार - अन्नाराम 'सुदामा'
  डॉ.संजीव कुमार (537) 56
- राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी की आत्मकथाओं का विवेचन
  राजेन्द्र कुमार एवं डॉ.वंदना कुमार (547) 59

Sanskrit Literature

- नाथ सिद्ध साहित्य में शिव का स्थान : एक अध्ययन
  डॉ.सरिता बहुगुणा (538) 62
- विदुरनीत्यानुसारं सदाचार-शील-क्षमा-सन्तोषादीनां नैतिक मूल्यानां विवेचनम्
  डॉ.सुरेन्द्र पाल वत्स (503) 65
- विदुरनीत्यानुसारं राजनीतेः चतुर्भेदाः
  शर्मिला (503) 68

History

- राष्ट्र उभारणीत भटक्या-विमुक्ताचे योगदान : ऐतिहासिक अध्ययन
  प्रा.डॉ.दशरथ पवार (556) 70
- बस्तर की परलकोट जमींदारी के जनजातीय विप्लव के महानायक शहीद गैदसिंह : एक ऐतिहासिक पुनर्विश्लेषण (1819-1925)
  डॉ.विजय कुमार बघेल एवं श्रीमती सुधा खापर्डे (550) 72

Political Science

- Role of Indira Gandhi in International Politics
  Dr. Vandana M. Mahure (545) 75
- दक्षेस : विश्व में उभरती आशा
  डॉ.विनी शर्मा (552) 78
- भारतीय स्वाधीनता संग्राम में छत्तीसगढ़ की जनजातियों का योगदान
  डॉ.(श्रीमती) सुनीता यादव (546) 81

Sociology

- राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना और गरीबी उन्मूलन : एक मूल्यांकन
  भेष कुमार देवांगन (544) 81
- वस्तु कर सेवा लागू होने पर राज्यों के विकास की संभावनाएँ : उत्तराखण्ड राज्य के ग्रामीण समाज का अध्ययन
  डॉ.रेखा बहुगुणा (565) 87
- भारत में बांग्लादेशी शरणार्थियों से जुड़े प्रमुख मुद्दों का अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के कांकेर जिले के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.एल.एस.गजपाल एवं राम नरेश टण्डन (544) 89
- नगरीय परिवेश में मुस्लिम महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति (छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिले के महासमुन्द नगर के विशेष संदर्भ में)
  नसरीन मुमताज, डॉ.जया ठाकुर एवं डॉ.एल.एस.गजपाल (575) 92
- ओशो अनुयायियों के गृहस्थ जीवन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण (राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) नगर के विशेष संदर्भ में)
  स्नेह कुमार मेश्राम एवं डॉ.अमरनाथ शर्मा (559) 94
- मलिन बस्तियों में महिलाओं की समस्याएँ (मध्यप्रदेश के बालाघाट शहर के विशेष संदर्भ में)
  आरती भिमटे कांकरिया एवं डॉ.सपना शर्मा 'सारस्वत' (554) 97

Geography

- Spatio-Temporal Changes of Female Workers : A Case Study of Ahmednagar District (MS)
  Dr. Narke S.Y. (505) 100
- कार्यशील महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना : रायपुर नगर के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन
  डॉ.सरला शर्मा एवं मीनाक्षी ताम्रकार (541) 104

Asian Research Consortium

Asian Journal of Research in Social Sciences and Humanities
Vol. 7, No. 11, November 2017, pp. 33-42.

ISSN 2249-7315
A Journal Indexed in Indian Citation Index
DOI NUMBER: 10.5958/2249-7315.2017.00531.7
UGC APPROVED JOURNAL

Asian Journal of Research in Social Sciences and Humanities

www.aijsh.com

Education Status of Girls in Naxal Effected Areas of Chhattisgarh State - A Socio-Education Study

Dr. L. S. Gajpal*; Dr. K. N. Gajpal**; Dr. B. K. Dewangan***

*Associate Professor,
School of Studies in Sociology,
Pt. Ravishankar Shukla University,
Raipur, India.

**Associate Professor,
Pragati College,
Raipur, India.

***Associate Professor,
Government College,
Ghumka, Rajnandgaon, India.

Abstract

Present paper examines the A Socio-Education Status of Girls in Naxal Effected Areas of Chhattisgarh State. The main objective of the study was to find out the problems and status of tribal girl's education in Naxal effected areas of Chhattisgarh state. Following the purposive sampling 750 girls of upper middle school were selected as respondents. The findings of the study show that tribal culture, poverty and lack of awareness amongst the tribal parents is the main cause affecting the education of girls in tribal areas. Lack of schooling facility and naxal movement is also one of the significant factors responsible for low education status amongst the tribal girls.

Keywords: Tribal Girls, Naxal movement, Education Status, Tribal culture, Social beliefs.

Introduction

According to the census of 2011, more than eight percent of the country's total population comprises of tribes.[1] in the constitution of India, special provisions have been made for the tribal regions. A large number of tribes are present in the north-eastern states like Assam, Tripura,

ISSN 0975 – 6795 (print)
ISSN 2321– 5828 (online)
Research J. Humanities and Social Sciences. 8(1): January - March, 2017, 15-17.

Research Article

www.anvpublication.org

***Corresponding Author:**
Rohan Prasad
Research Scholar,
Govt. V.Y.T. P.G. College,
Durg, C.G.

Received on 20.12.2016
Modified on 04.01.2017
Accepted on 22.01.2017
© A&V Publication all right reserved

Economics of Cultivation of Exotic Fruits and Vegetables in Chhattisgarh

Rohan Prasad[1], Dr. A.K Vishwakarma[2], Dr. Sikha Agrawal[3]
[1]Research Scholar, Govt. V.Y.T. P.G. College, Durg, C.G.
[2]Principal, Govt. College, Bori, C.G.
[3]Prof. Economics, Govt. V.Y.T. P.G. College, Durg, C.G.

ABSTRACT:

In this research an attempt has been made to study the economics of exotic fruits and vegetables in context of Chhattisgarh. With advent of multinational hotel chain in Chhattisgarh the demand for the exotic fruits and vegetables are rising, hence farmers can find a local market for these crops which fetches a healthy wholesale price. The two crops analysed in this study is zucchini which yielded a profit of 2.2Lakhs/Hectare and Green Cantaloupe which yielded a profit of 2. 7 Lakhs/Hectare. The wholesale price of these crops always remains the same as there is no heavy competition among cultivators of these crops. The Crops are in demand while their availability is limited hence a healthy whole sale price is always maintained. The second advantage of these crops is that the farmer reaches the breakeven point with ease, on the contrary conventional crops such as tomato may fetch a price of 1 Rupee per kilogram in the wholesale market hence farmers are not even able to reach the breakeven point.

KEY WORDS: Chhattisgarh, Exotic Fruits and Vegetables and Cost-benefit analysis

INTRODUCTION:

In India, agricultural activities can be divided into two parts. First food items and second the non-food items. Food items include cultivation of vegetables, fruits, dairy, meat and fishery [1]. Non-Food items include fuel and fuel Wood such as Jatropha and Babool, herbs, ornamental plants, trees and saplings, floriculture etc. The cultivation practices of these items are done mostly to cater the needs of the ever-growing population of the nation as well as for the export of these food items [2]. When it comes to cultivation of food items grains and cereals are mostly cultivated for meeting up nations demand. Vegetables and fruits such as watermelon and muskmelon they are meant for both national as well as international market. Under export category Indian farmers used to grow exotic vegetables such as cherry tomato, dragon fruit, zucchini, Jalapeno, Thai bird chilly and figs [3]. With advent of multinational chain of hotels such as Taj, Hayat and Marriot in came the local demand for these exotic vegetables and suddenly the farmers involved in cultivation of these exotic vegetables find it more profitable to supply to these local consumers as it reduced their packaging and transportation cost.

The cultivation of exotic fruits and vegetables is not an easier task. Firstly, exotic vegetables and fruits requires the right amount of fertilizer, temperature and water to survive, flourish and fruit. Secondly the seeds as expensive and is not readily available in the market [4]. Thirdly the seeds are heirloom variety mostly, that means their production will be not as that of Hybrid ones and farmers must tediously work for an optimized production. Once the production is harvested it bears good result and profit to the farmers [5].

The present study is focused on the State of Chhattisgarh. Farming of exotic fruits and vegetables is catching up in Chhattisgarh due to availability of local demand for the same. The study presents a complete cost-benefit chart for different exotic vegetable that are being cultivated in the Chhattisgarh. The figures presented are average costing and profit, calculated by averaging figures obtained from self-administered survey.

METHODOLOGY:

Self-Administered questionnaire was distributed to the farmers practicing cultivation of exotic vegetables and fruits. The following variables were kept under consideration

1. Vegetable/Fruit Output
2. Cost of Planting (Seeds)
3. Fertilizer in Kg
4. Herbicide in Kg
5. Insecticide in Kg
6. Cost of Hired/Family Labour
7. Cost of Farm implementation/Land Preparation (Tractor, Farm Sloping, Bed preparation)

It was assumed that the modern irrigation system is in place and hence cost of first time installation of irrigation system is not included in the analysis.

Analysis

Table 1 presents the analysis for Zucchini

Table 1: Cost-Benefit analysis for Zucchini Vegetable Per Hectare

Item	Quantity (Kgs)	Price Per Kg (Rs)	Cost (Rs)
Seeds	3	1800	5400
Land Preparation			8000
Fertilizer (N)	180	8.40	1519.2
Fertilizer (P)	50	24	1200
Fertilizer (K)	45	17.33	780
Herbicide	6	320	1920
Insecticide	6	450	2700
Labour	6 labour X 90days	120 per labour	64800
Total			79119

Output in Kgs/Hectare	Average Price in Wholesale Market (Rs.)	Total Sales (Rs.)
20000	15	300000

Total Sales Per Hectare (Rs.) (x)	Total Cost Per hectare (Rs.) (y)	Profit Per Hectare (Rs.) (x-y)
300000	79119	220881

Zucchini is 120-day crop and starts to harvest from 80-85th day after sowing of seeds. The total sales average around 300000 Rupees and cost per hectare for cultivation averages to 79119 Rupees. Hence a total profit per hectare averages around 220881 Rupees Per Hectare.

Table 2 Presents analysis for Green Cantaloupe. Green Cantaloupe is an exotic Variety of Muskmelon. Muskmelon is easy to cultivate and contrary to the belief muskmelon can be cultivated on any soil type.

Table 2: Cost-Benefit analysis for Green Cantaloupe Per Hectare

Item	Quantity (Kgs)	Price Per Kg (Rs)	Cost (Rs)
Seeds	3	3600	10800
Land Preparation			15000 (includes land preparation and wooden boards needed for fruit maintenance)
Fertilizer (N)	200	8.40	1680
Fertilizer (P)	100	24	2400
Fertilizer (K)	60	17.33	1039
Herbicide	6	320	1920
Insecticide	6	450	2700
Labour	6 labour X 90days	120 per labour	64800
Total			100339

Output in Kgs/Hectare	Average Price in Wholesale Market (Rs.)	Total Sales (Rs.)
13500	3	378000

Total Sales Per Hectare (Rs.) (x)	Total Cost Per hectare (Rs.) (y)	Profit Per Hectare (Rs.) (x-y)
378000	100339	277661

Green Cantaloupe is 180-day crop and starts to harvest from 100-105th day after sowing of seeds. The total sales average around 378000 Rupees and cost per hectare for cultivation averages to 100339 Rupees. Hence a total profit per hectare averages around 277661 Rupees Per Hectare.

RESULT AND CONCLUSION:

From the analysis, the cultivation of exotic fruit and vegetable is profitable. However, the cultivation of these exotic fruit and vegetable is a tedious task and demands for an initial heavy inflow of money, which is mostly needed in form of cash. Once sustained the exotic vegetables produce better profit than conventional crops. The two crops analysed in this study is zucchini which yielded a profit of 2.2Lakhs and Green Cantaloupe which yielded a profit of 2. 7 Lakhs. The wholesale price of these crops always remains the same as there is no heavy competition among cultivators of these crops. The Crops are in demand while their availability is limited hence a healthy whole sale price is always maintained. The second advantage of these crops is that the farmer reaches the breakeven point with ease, on the contrary conventional crops such as tomato may fetch a price of 1 Rupee per kilogram in the wholesale market hence farmers are not even able to reach the breakeven point.

REFERENCES:

1. Amarnath, J. and Sridhar, V., 2012. An Economic Analysis of Organic Farming in Tamil Nadu, India. *Bangladesh Journal of Agriculture Economics*, 1(2), pp. 33-51.
2. Chandrakar, N., 2011. *Chhattisgarh Inside Study*. 1st ed. Raipur: Arihant.
3. Charyulu, D. and Biswas, S., 2010. Economic and Efficiency of Organic Farming vis-a-vis Conventional Farming in India. *Indian Institue of Management Ahmedabad-Research and Publications*, 1(1), pp. 1-10.
4. DeBoer, J. L., 2005. Economic Analysis of Precision Farming. *Journal of Economic and Agricuture Research*, 1(1), pp. 1-8.
5. European Commission, 2013. *Organic versus conventional farming, which performs better financially*, 4: 4.